Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Dec 2, 2023
Matches: 6 / 2209 words
Sources: 1

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code

विदेश ापार (Foreign Trade) सुनील कु मार भूगोल विभाग जे० एस० वि वि ालय, शिकोहाबाद ावनाः- विदेशी ापार और एफडीआई के लिए खुलापन उस द ता को बढ़ाता है जिसम विभि ेों म संसाधनों की गतिशीलता म बाधाओं को हटाकर उ ादन कारकों को आवंटित किया जाता है। इस अ ाय म हम अनुभवज प से विदेशी ापार और एफडीआई के खुलेपन और चीन के संरचना क प रवत न के बीच संबंधों की जांच करते ह । हमारे तिगमन प रणाम चीन की औ ोगीकरण की िया का वि ेषण करने के लिए लुईस मॉडल की उपयोगिता का समथ न करते ह । हमारे अनुभवज वि ेषण यह भी दशा ते ह कि विदेशी ापार और एफडीआई के ति खुलापन चीन के संरचना क प रवत न की िया म मह पूण भूमिका निभाता है। प रणाम बताते ह कि ेीय खुलापन कृ षि से विनिमा ण े म म हि ेदारी के बदलाव के संदभ म ेीय संरचना क प रवत न को बढ़ावा देता है। प रचय: चीन के विदेशी ापार ने देश की नाटकीय आथि क वृ और विकास के अनु प शानदार वि ार का अनुभव किया है। विदेशी ापार, आथि क वृ और विकास के बीच कारणा क संबंध लंबे समय से अकादमिक शोधकता ओं के साथ-साथ सरकारी नीति-निमा ताओं के बीच ब त चि का विषय रहा है। इस विषय पर ापक साहि की एक मुख खोज से पता चलता है कि अंतररा ीय र पर सयि देश उन देशों की तुलना म अधिक उ ादक होते ह जो मु प से अपने घरेलू बाजारों के लिए उ ादन करते ह । विदेशी ापार वि ार आथि क वृ और विकास पर सकारा क भाव डाल सकता है ोंकि यह ात है मता उपयोग और संसाधन आवंटन की द ता म वृ , देश को पैमाने की अथ व थाओं का लाभ उठाने की अनुमति देना , और तकनीकी प रवत न और सम उ ादकता को बढ़ावा देना (टायलर, 1981; बालासा, 1985, 1988)। अनुभवज अ यनों से पता चलता है कि विदेशी ापार तकनीकी गति, पूंजी संचय, औ ोगिक संरचना उ यन और सं थागत उ ति को बढ़ावा देकर आथि क वृ और विकास को सकारा क प से भावित करता है (सन और हेशमती, 2010)। विशेष प से, पूंजी और म वत वु ओं के आयात म वृ से घरेलू विनिमा ण म उ ादकता म वृ हो सकती है (ली, 1995)। नियात घरेलू कं पनियों को ती अंतररा ीय ति धा म

उजागर करता है, जो उ अपनी अंतररा ीय ति धा कता बढ़ाने के लिए उ ादकता म सुधार करने के लिए मजबूर करता है (वैगनर, 2007 सन और हेशमती, 2010)।). ान और ौ ोगिकी के फै लाव के कारण नियात उ ोग म काम करके सीखना अधिक तेजी से होता है। 1960 के दशक से पहले, विदेशी ापार के भावों पर शोध कु छ विशि देशों तक ही सीमित था। जैसे-जैसे आधुनिक अथ मिति तकनीक उ त ई ह , वैसे-वैसे विदेशी ापार और आथि क विकास के बीच संबंधों का वि ेषण करने के लिए और अधिक जटिल प तियाँ सामने आई ह । आज तक, इस े म अनुसंधान को मोटे तौर पर दो ेणियों म विभाजित किया जा सकता है। एक विदेशी ापार के खुलेपन और आथि क विकास के बीच कारणा क संबंध पर ान क ित करता है जबकि

दूसरा मु प से आथि क वृ और विकास म विदेशी ापार के योगदान की जांच करता है (विशेष प से, विकासशील देशों म विदेशी ापार, आथि क वृ और विकास के बीच संबंध मजबूत तीत होता है। उदाहरण के तौर पर चीन को ल , तो उसके विदेशी ापार म ब त तेजी से वृ ई ोंकि देश क ीय योजना से बाजार णाली म बदल गया। 2000 के दशक तक, चीन के विदेशी ापार का कु ल मू 500 बिलियन अमे रकी डॉलर से अधिक हो गया था। इसके विदेशी ापार ने 1978 से 15 तिशत की औसत वाषि क वृ हासिल की है, जो उसी अवधि म 9.5 तिशत की औसत वाषि क सकल घरेलू उ ाद की वृ से उ ेखनीय प से अधिक है। विकासशील देशों के लिए विदेशी ापार और आथि क विकास के बीच संबंधों पर किए गए अ यनों ने नव औ ोगीकृ त अथ व थाओं की सफलता की कहानियों के बाद, 1980 के दशक म पहली बार उभरे निया तआधा रत विकास पर आम सहमति के साथ काफी शोध को आकषि त किया है (फे डर, 1983; ु एगर, 1990) ; सन और पा रख, 1999). निया त-आधा रत विकास प रक ना ने माना कि निया त अ प से आथि क वृ और विकास को बढ़ावा देता है (टायलर, 1981 ड ूबी, 1987) की विकास नीतियों को आगे आकार दिया। हालाँकि, जबकि एशिया की नव औ ोगीकृ त अथ व थाओं को मोटे तौर पर निया त-आधा रत वृ और विकास के सफल उदाहरण के प म देखा जाता है, अ अथ व थाओं के लिए आथि क वृ और विकास पर निया त के भावों पर ब त कम आम सहमति है, खासकर जब ये अथ व थाएं बड़ी और ापक हों।). इस प रक ना ने कई देशों और वि ब क की विकास नीतियों को और आकार दिया (क ीकृ त योजना से चीन जैसी बाज़ार णाली म सं मण (सन और पा रख, 1999)। चीन जैसी बड़ी विकासशील सं मणकालीन अथ व था के लिए, अनुभवज अनुसंधान अ र मि ति प रणाम देता है। एक ओर, कु छ अ यनों से पता चलता है कि चीन म निया त वि ार और खुले ार की नीति का चीन की आथि क वृ पर सकारा क भाव पड़ा है (ली और लेउंग, 1994; ान और ोक, 1995; लाड , 1995; ज़ू, 1995; डिमग र, 1996), या कि चीन के विदेशी ापार और उसके आथि क विकास और गति के बीच एक ि दिश कारण संबंध है (लियू एट अल., 1997; शान और सन, 1998)। इसके अलावा, शेन और ली (2003) ने पाया कि कु ल उ ादन और ति सकल घरेलू उ ाद म निया त की हि ेदारी के बीच एक मह पूण सकारा क संबंध मौजूद है, और पूंजी संचय और सं थागत प रवत न दो मह पूण चैनल ह जिनके मा म से विदेशी ापार ति पर भाव डालता है। सकल घरेलू उ ाद. झांग एट अल. (2005) बताते ह कि विदेशी मांग (निया त) चीन के कु ल उ ादन र पर सकारा क योगदान देती है, जबकि विदेशी आपूति (आयात) का देश के कु ल उ ादन र पर नकारा क भाव पड़ता है, लेकिन दोनों का अलग-अलग गुणक भाव होता है। भले ही कु ल निया त की मा ा कु ल आयात के बराबर हो, फिर भी

विदेशी ापार का शु भाव चीन की आथि क वृ म सकारा क योगदान देगा। दूसरी ओर, हालांकि, यांग और शू (1998) दिखाते ह कि चीन की वृ मु प से भौतिक पूंजी के बढ़ते संचय से ई है, और ज री नहीं कि चीन म निया त और आथि क विकास के बीच कोई सकारा क संबंध मौजूद हो। एफटीपीपीटी (1999) ने नि ष निकाला, 'शु निया त का योगदान ब त सीमित है... कु छ वष को छोड़कर (जैसे 1990 और 1994), जब विदेशी ापार अधिशेष म नाटकीय प से वृ ई। के वल उन कु छ वष म , शु निया त का योगदान अपे ाकृ त बड़ा (तीन तिशत से अधिक) था...' झू (1998) का तक है कि चीन का आथि क विकास मु प से निया त के बजाय घरेलू मांग से ेरत है। यांग (1998) और ली एट अल। (2004) का मानना है कि विदेशी ापार का चीन के विभि ों म आथि क विकास पर अलग-अलग भाव पड़ता है। शेन (1999) और झाओ एट अल। (2001) ने पाया कि चीन के निया त और उ ादन के बीच एक अ कालिक कारण मौजूद है, लेकिन दोनों के बीच कोई थर दीघ कालिक संतुलन संबंध नहीं है। झांग और (1999) ने पाया कि चीन का विदेशी ापार संतुलन और सकल घरेलू उ ाद की वृ नकारा क प से संबंधित है: जिन वष म उ सकल घरेलू उ ाद की वृ दर देखी जाती है, शु निया त का अनुमानित योगदान आमतौर पर कम होता है। सन (2000) को विदेशी ापार और चीन म आथि क विकास के बीच कोई मह पूण कारणा क संबंध नहीं मिला। इन अ यनों ारा दान किए गए मि ित प रणामों से दो कमियों का पता लगाया जा सकता है। सबसे पहले, चाहे अ यन विदेशी ापार के खुलेपन और आथि क विकास के बीच कारण संबंध पर क ित हो, या विशेष प से बाद वाले म पूव के योगदान पर, वे आम तौर परजब उन तं ों या चैनलों की बात आती है जिनके मा म से विदेशी ापार के खुलेपन और आथि क विकास के बीच एक यूनिडायरे नल या िदिशा क कारण संबंध थापित किया जा सकता है, तो इसम गहन वि ेषण का अभाव है। दूसरा, अ यन आमतौर पर चीन के विभि ों या ों म विकास के चरण के संदभ म आथि क विकास पर विदेशी ापार के अलग-अलग भावों को अलग करने म विफल रहते ह । हालाँकि, उन तं ों या चैनलों की चचा जिनके मा म से विदेशी ापार के लिए खुलापन आथि क वृ और विकास पर भाव डाल सकता है, इसे ह श ों म कह तो चुनौतीपूण है, ोंकि दोनों ब त जटिल प से जुड़े हो सकते ह । यही कारण है कि आथि क मॉडल विकसित करते समय आथि क अनुसंधान ापार को विकास से अलग करता है। विदेशी ापार को विकास मॉडल म शामिल करना या ापार मॉडल म अ थायी गतिशीलता को शामिल करना प से आसान नहीं है। कठिनाइयों के बावजूद, इस अ ाय का शेष भाग उन संभावित तं ों पर चचा करता है जिनके मा म से विदेशी ापार आथि क विकास को भावित कर सकता है। शेष अनुभाग नि ानुसार व थत ह । दूसरे खंड 'चीन का विदेशी ापार' म , हम सं ेप म बताते ह कि चीन की विदेश ापार नीति और विदेशी ापार दश न किस तरह विकसित आ है। तीसरे खंड 'बुनियादी िकोण और उनके निहिताथ ' म , हम इन िकोणों के अनुभवज निहिताथ पर ान क ित

करते ए, विदेशी ापार और आथि क विकास के बीच संबंधों का अ यन करने के लिए विभि िकोणों पर चचा करते ह । चौथे खंड 'एक ारंभिक अनुभवज वि ेषण' म , हम विदेशी ापार के लिए ेीय खुलेपन और चीन के ांतों म ेीय आथि क विकास को देखते ह ।

भारत का विदेश ापार: भारत के विदेश ापार के अ ग त भारत से होने वाले सभी निया त एवं विदेशों से भारत म आयातित सभी सामानों से है। विदेश ापार, ये आंकड़े व ु एवं कमोडिटी म ापार के आंकदे ह , इनम सेवाओं एवं विदेशी निवेश स लित नहीं है। ाचीन काल से भारत वि के सुदूर भागों से ापार करता रहा है। ाचीन काल से मसालों और इ ात का निया त 1 होता रहा है। रोम के भारत से ापा रक स थे। वा ो डि गामा 1498 म कालीकट पँचा था। उसकी इस या ा से पुत गाल को इतना लाभ आ कि अ यूरोपीय भी यहाँ से ापार करने को आतुर हो गये। भारतीय ापा रयों ने 1745 के पहले अजरबैजान के बाकू के पास एक अ िमंदिर का निमा ण किया था। ापार सहयोगी: भारत के वाणि एवं ापार के अनुसार, भारत के 15 बड़े ापार सहयोगी ऐसे ह जिनके साथ 2015-16 म भारत के कु ल ापार का 59.37% ापार आ। ये आंकड़े व ु एवं कमोडिटी म ापार के आंकदे ह , इनम सेवाओं एवं विदेशी निवेश स लित नहीं है। वष 2014 म भारत ने 318.2 बिलियन अमे रकी डॉलर के मू का सामान निया त किया तथा 462.9 बिलियन अमे रकी डॉलर के मू का सामान आयात किया। भारत वि के 190 देशों को लगभग 7500 व ुएँ निया त करता है तथा 140 देशों से लगभग 6000 व ुएँ आयात करता है। वत मान म चीन भारत का सबसे बड़ा ापार सहयोगी है। (विकिपीडिया से) नि ष : यह वि ीय विकास, रोजगार के अवसरों के सृजन और अथ व था म गरीबी म कमी का एक भावी तं रहा है। विदेशी ापार के प रणाम प देश के संसाधनों का उचित उपयोग होता है, औ ोगीकरण के लिए आव क इनपुट उपल कराना, अधिशेष उ ादन के लिए आउटलेट दान करना, ब त आव क विदेशी मु ा अजि त करने म सहायक होता है । विदेशी ापार पर विभि सां कीय सं हों के लिए लागू की जाने वाली प रभाषाएं और काय णाली अवधारणाएं अ र स भ के मामले म भि होती ह (उदाहरण, विशेष ापार बनाम सामा ापार) और कवरेज (ारंभिक रपोटि ग, सेवाओं म ापार को शामिल करना, त री के माल का अनुमान और सीमा पार अवैध सेवाओं का ावधान). प रभाषाओं और तरीकों पर जानकारी दान करते मेटाडेटा को अ र डेटा के साथ काशित किया जाता है।

Sources

1	https://brainly.in/question/29499850 INTERNET <1%	

EXCLUDE CUSTOM MATCHES	OFF
EXCLUDE QUOTES	ON
EXCLUDE BIBLIOGRAPHY	ON